P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-12* August- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थानी लोकगीत एक अमूल्य धरोहर

Rajasthani Folk Song is an Invaluable Heritage

Paper Submission: 00/00/2020, Date of Acceptance: 00/00/2020, Date of Publication: 00/00/2020

नीलम सैन
सहायक आचार्य,
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

राजस्थान राज्य अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ का लोकसंगीत भी मनमोहक और कलात्मक सौन्दर्य से परिपूर्ण है और यहाँ के लोकसंगीत में रचे बसे राजस्थानी संस्कृति के द्योतक हमारे लोकगीत भी अनूठे हैं लोकगीत अपने स्वरूप को सामाजिक धरोहर से प्राप्त करते हैं लोकगीत सामाजिक जीवन के चित्रण मात्र नहीं है वे सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करते हैं। राजस्थानी लोकगीत जैसे रजवाड़ी लोकगीत, जैसलमेर के श्रृंगारिक लोकगीत एवम् ढूँढ़ाड़ी लोकगीत आदि है। लोकगीतों के अन्तर्गत संस्कार सम्बन्धी गीत, ऋतु सम्न्धी गीत, पर्व, त्यौहार, विवाह, संयोग, वियोग मिलन भक्ति तथा सामाजिक सम्बन्धों के गीत इत्यादि सम्मिलित है इन लोकगीतों में प्रयुक्त वाद्य यंत्र, राग, ताल, नृत्य तथा उनमें निहित साहित्य की विस्तारपूर्वक व्याख्या प्रस्तुत लेखन में की गई है।

The state of Rajasthan holds its important place for its cultural heritage. The folk music of this place is also full of enchanting and artistic beauty and our folk songs are also unique, reflecting the Rajasthani culture created in the folk music, folklore derives its form from social heritage, folklore is not only a depiction of social life, but also social life They affect. Rajasthani folk songs like Rajwadi folk songs, Jaisalmer folk songs and Khojhadi folk songs etc. Under folk songs include songs related to rituals, Ritu Samandhi songs, festivals, festivals, marriages, coincidences, disconnections, devotional and social relations songs, etc. These musical instruments used to describe the ragas, rhythms, dances and the literature contained in them in detail. Has been done in writing.

मुख्य शब्द : राजस्थानी, लोकगीत, अमूल्य धरोहर, रजवाड़ी, संयोग–वियोग, जीवंतता, अन्वेषण, लावण्य, अनुभूति।

Rajasthani, Folk Songs, Priceless Heritage, Rajwadi, Coincidence-Disconnection, Vibrancy, Exploration, Beauty, Feeling.

प्रस्तावना

आत्माभिव्यक्ति मानव का स्वभाव है यह आकांक्षा उतनी ही प्राचीन है जितना मानव स्वयं। मानव मन द्वारा अनुभूति के विशेष क्षणों में जो भाव–लहरी शब्द रूप ग्रहण करता है वही लोकगीत है इस कड़ी में राजस्थान राज्य अपना गौरवमय इतिहास बनाये हुये है यहाँ की लोक संस्कृति में लोकगीत रचे–बसे है। इन गीतों में जीवन सम्बन्धी विपुल साहित्य मिलता है। जन्म, मुण्डन, विवाह, मिलन, वियोग, प्रेम, पराजय, हर्ष, विषाद, दैनिक कार्यों का माधुर्य उत्सवों के अवसर उल्लास जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जो लोकगीतों में व्यक्त नहीं है राजस्थानी लोकगीतों के स्वरों का विश्लेषण करने पर, शास्त्रीय संगीत जानने वाले व्यक्ति पर जो सबसे पहले प्रभाव पड़ता है, वह यह है कि इनकी धुनों में लावण्य, लालित्य व मार्धुय की भरमार है। साहित्य व स्वरों का बड़ा अपूर्व मेल है।

ध्वनियों की एक व्यवस्था सी दीख पड़ती है जिसमें संगीत शास्त्र के वादी–संवादी, आरोह–अवरोह की झलक सी टपकती है किन्तु फिर भी उसमें बन्धन नहीं, एक स्वतंत्रता–सी गान में दिखाई देती है और राजस्थानी संस्कृति की चमक पर लोकगीत लोकजीवन का सुन्दरतम प्रतिबिम्ब प्रदर्शित होते हैं। राजस्थानी लोकगीत मानव मन की अभिव्यक्ति है स्वयं को समाज के साथ जोड़ने का प्रयत्न है। अगर ये लोकगीत जीवन के हर पहलू को व्यक्त ना कर पाएं तो शायद नीरसता मानव–जीवन में अपना स्थान कायम कर ले जिसका परिणाम भी भयानक है और विनाशकारी भी राजस्थानी लोकगीत हमारी संस्कृति

की चमक है जिसके अन्तर्गत रजवाड़ी लोकगीत, ढूँढाड़ी लोकगीत, जैसलमेर के श्रृंगारिक लोकगीत इत्यादि के बारे में यह विश्लेषणात्मक लेखन प्रस्तुत है।

साहित्यावलोकन

राजस्थान के लोकगीतों की अवधारणा को समझने के लिए राजस्थान की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक बनावट को समझना आवश्यक होगा और इसका परिणाम यह होगा कि हमारी भारतीय संस्कृति की झलक जन–जीवन की मान्यताओं तथा विचारों की झलक हमें आज भी राजस्थान में ही देखने को आती है यहाँ की भौगोलिक स्थिति ने यहाँ के जन–समुदाय को निरन्तर रूप में यहाँ बसने का अवसर दिया और उन्हें अपनी संस्कृति के लिए निष्ठावान बनाया, राजस्थान के लोकगीतों में लोकाचार व श्रृंगारिकता का मिश्रण होना अनिवार्य है। उत्तम साहित्य व संस्कृति के लिए लोकगीतों में गायन–वादन की अनिवार्यता होती है जो कि गतिशील समाज के लिए अति आवश्यक है। इसके अभाव में लोकगीतों की जीवंतता नष्ट हो जाती है। अतः लोकगीतों का उत्तम तरीके से अन्वेषण करना जरूरी है। इसलिए शोध कार्य हेतु राजस्थानी लोकगीत एक अमूल्य धरोहर विषय पर शोध सर्वज्ञा प्रासंगिक है। रजवाड़ी लोकगीत (लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत) जैसलमेर के श्रृंगारिक लोकगीत (डॉ. भूराराम सुथार) राजस्थानी लोकाचार गीत (चन्द्रकान्ता व्यास) ढूंढाड़ी लोकगीतों का सांगीतिक विवेचन (अनुर्सूया पाठक) राजस्थान का लोकसंगीत शन्नों खुराना, राजस्थान का लोक–संगीत (देवीलाल सामर) गीतायन (कमला सोमाणी) राजस्थानी लोकगीत शिवसिंह चोयल, गीता रो हेलो (डॉ. रविप्रकाश नाग) आदि कृतियों का व्यापक अध्ययन व विश्लेषण लोकगीतों में प्रस्तुत किया गया है। अतः यह विषय शोधा लेख हेतु सर्वथा समीचीन है।

अध्ययन का उद्देश्य

लोकगीतों का संसार सत्य का संसार है। इन गीतों में प्रकृति की सम्पूर्ण मधुरता का समावेश होता है। इन गीतों को युग का दर्पण कहा जा सकता है। इनका विनाश युग संस्कृति का विनाश होगा, इन गीतों में जन्म के पूर्व से मृत्यु तक की प्रत्येक घटना वर्णित होती है। इस कड़ी में राजस्थान प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत हमारे लोकगीत हमारी धरोहर है। जहां हर पर्व, त्यौहार जन्म, मृत्यु, मिलन, वियोग और भक्ति के लोकगीत समय–समय पर आम–जन द्वारा गाये बजाये जाते हैं। राजस्थानी लोकगीतों के माध्यम से हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान प्रदर्शित होती है। हमारी राजस्थानी संस्कृति, रहन–सहन, खान–पान, पहनावा, संगीत साहित्य आदि का प्रदर्शन होता है। राजस्थानी लोकगीतों में रजवाड़ी गीत, ढूँढ़ाड़ी लोकगीत, जैसलमेर के श्रृंगारिक लोकगीत। राजस्थानी लोकगीतों में बसे आमजन के संगीत को तथा हमारी सांगीतिक विरासत को प्रदर्शित करना इस लेखन का उद्देश्य है।

परिकल्पना

राजस्थानी लोकगीतों का लक्ष्य हमारी सांस्कृतिक विरासत जो कि सम्पूर्ण विश्व में अपना परचम लहराये हुये है, उसे निरन्तर विकसित करते रहना है। हमारी भारतीय संस्कृति में राजस्थानी लोकगीतों के स्वरों का विश्लेषण करने पर, शास्त्रीय संगीत जानने वाले व्यक्ति पर, जो सबसे पहला प्रभाव पड़ता है वह यह है कि इनकी धुनों में लावण्य, लालित्य व माधुर्य की भरमार है जो मानव–मन में उत्साह और श्रृंगार की उत्त्पत्ति करता है। इस शोध लेखन से लोकगीतों की महत्तता व उपयोगिता को स्पष्ट करने में सहायता मिल सकेगी इसमें संबंधित विषय के पूर्वाग्रहों के निदान और निवारण में सहायता मिल सकती है।

शोध विधि

प्रस्तावित शोध में मननात्मक शोध की विश्लेषण विधि, व्याख्यात्मक और मूल्यांकन परक विधियों को अपनाया जायेगा।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध लेख के लिए राजस्थानी लोकगीतों से संबंधित कृतियों का उपजीव्य ग्रन्थ के रूप में उपयोग किया जायेगा। इन सबके अतिरिक्त सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में अन्य डायरी, समीक्षाओं, आलेख, शोध लेखों, शोध प्रबंधों का उपयोग किया जायेगा। अन्य सहायक सामग्रियों के लिए गूगल–पुस्तक या सूचना तंत्र के वेब लिंक का उपयोग किया जाऐगा।

प्रदत्तों का विश्लेषण

लोकसंगीत एक व्यापक परिवार है जिसमें अनन्त शाखाएं संसार के विभिन्न देशों की ग्रामीण जातियों की वाणी में व्याप्त है। शास्त्रीय संगीत और कलात्मक सौन्दर्य से उपस्थित होने पर भी ग्रामवासियों के सुःख–दुःख संयोग और वियोग, पीड़ा और उल्लास के स्वर संगीत की विभिन्न धुनों में मुखरित हो उठते हैं। इस दृष्टि से सम्पूर्ण संसार के लोकगीतों की आत्मा में साम्य है। शब्दों और भाषा के अपरिचित होने पर भी, संगीत के माध्यम से वे मूल अर्थ और भाव को व्यक्त करते हैं।

लोकगीत की परिभाषा

हिन्दी साहित्य कोष के अनुसार लोकगीत का अर्थ है लोक में प्रचलित गीत, लोक निर्मित गीत व लोकविषयक गीत।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लोकगीतों को संस्कृति का सुखद सन्देश ले जाने वाली कला कहा है।''[1] यद्यपि स्वरों के उतार–चढ़ाव का अधिक विचित्रता और विविधिता इन लोकगीतों में उपलब्ध नहीं होती है किन्तु जो भी स्वर गायन में प्रयुक्त होते हैं वे अपनी सहजता के कारण बरबस अपनी और आकृष्ट करते हैं। अन्य देशों व भारत के सब प्रदेशों की तरह राजस्थान के लोकगीतों के पीछे भी जन–साधारण की स्वीकृति है। राजस्थान का लोकगीत भी अति मौलिक, काव्यपूर्ण व हृदयग्राही है जितनी उनकी कविता मर्मस्पर्शनी, ओजस्विनी व प्रभावोत्पादिनी है उतनी ही उनके स्वरों में सुन्दरता, भावुकता और तेज है जितना उनमें सरस काव्य है उतना ही साधारण सौन्दर्य, स्वरों में छुपे हुए कण, खटके व मीड़ का स्थान है। यदि कोई चाहे कि उनकी स्वरलिपि ठीक–ठीक तौर पर लिखी जाय, तो वह उस गीत का वास्तविक चित्र नहीं खींच सकता कुछ छोटी–छोटी बातें जो गायक के गले में बसी है उन्हें लेखनी नहीं लिख सकती है।''[2]

राजस्थानी लोकगीतों के प्रकार एवम् विशेषताएँ

राजस्थानी लोकगीत एक अथाह महासागर के समान है इस दृष्टि से लोकगीतों का वर्गीकरण भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिन्दी लोकगीतों के क्षेत्र में सर्वप्रथम, तथा सर्वप्रमुख कार्य करने वाले पं. रामनरेश त्रिपाठी है। इन्होंने अपनी ''कविता कौमुदी (ग्राम्य गीत) के प्रथम संस्करण में ग्राम्य गीतों को 11 वर्गों में बाँटा था और दूसरे संस्करण में इन वर्गों को बढ़ाकर 25 कर दिया है।''[3]

राजस्थानी लोकगीतों के पारखी पं. सूर्यकरण पारीक ने भी लोकगीतों के क्षेत्र विस्तार को दिखलाते समय उन्हें 29 वर्गों में विभक्त किया है।

1. देवी–देवताओं और पितरों के गीत।
2. ऋतुओं के गीत।
3. उपवास व्रत एवं त्यौहार के गीत।
4. तीर्थों के गीत।
5. संस्कारों के गीत।
6. विवाह के गीत।
7. भाई–बहन के प्रेम गीत।
8. साली–सरहज के गीत।
9. पति पत्नी के प्रेम गीत।
10. पणिहारियों के गीत।
11. प्रेम के गीत।
12. चक्की पीसते समय के गीत।
13. बालिकाओं के गीत।
14. चरखे के गीत।
15. प्रभाती गीत
16. हरजस राधाकृष्ण के प्रेम के गीत।
17. धमाले होली के अवसर पर पुरूषों द्वारा गाये गीत।
18. देश–प्रेम के गीत।
19. राजकीय गीत।
20. राज–दरबार, मजलिस
21. जम्मे के गीत (वीरो, सिद्ध पुरूषों, महात्माओं की स्मृति में रखे गए जागरण को जम्मा कहते हैं)
22. सिद्ध पुरूषों के गीत।
23. (क) वीरो के गीत (ख) ऐतिहासिक गीत
24. (क) कव्वालों के गीत (ख) हास्यरस के गीत
25. पशु–पक्षी सम्बन्धी गीत
26. शान्त रस के गीत।
27. गाँवों के गीत ग्राम–गीत।
28. नाट्य गीत
29. विविध गीत''[4]

राजस्थानी गीतों का जीवन सम्बन्धी साहित्य

राजस्थानी गीतों का सम्पूर्ण साहित्य वहाँ के लोगों की आवश्यकताओं पर आधारित है। राजस्थानी साहित्य में वीरता, प्रेम, दाम्पत्य, मातृ–प्रेम, स्नेह, बन्धु स्नेह, जन्म, मरण, सुख–दुःख, विवाह, उत्सव आदि विषयों पर राजस्थान का साहित्य गणना योग्य है। राजस्थान की भक्ति धारा भी अविरल है साथ ही सूरदास, तुलसीदास, कबीर जैसे उच्च कवियों की कविताओं को भी राजस्थानी भाषा में निर्मित किया गया है जो राजस्थानी साहित्य को उच्च कोटि का दर्जा प्रदान करता है। राजस्थानी लोक साहित्य में प्रार्थना, आनन्द और उल्लास संगीत और नृत्य का रूप धारण कर लेते हैं। लोकसाहित्य में स्वतन्त्र आत्म–अभिव्यक्ति की आभा दिखाई देती है। माता गर्भस्थ शिशु के जन्म पर हिलोरे गाकर अपने मातृ–प्रेम को प्रकट करती है। बच्चे के यज्ञोपवित संस्कार, सगाई तथा विवाह तक माता हर्षोल्लास से लोकगीत गाकर नववधु का स्वागत किया जाता है। गृहस्थ जीवन, भाई–बहिन का पवित्र–प्रेम, ससुराल में सास व ननद का अत्याचार, प्रिय की याद में विकस नारी, दाम्पत्य प्रेम के उदाहरण जैसे नीबूड़ों, बडलो, आबो, पीपली, नीमडलो इत्यादि नीमडली शीर्षक गीत में भी पत्नी अपने पति से उदयपुर के नीम के पेड़ का बीज मंगाने को कहती है ताकि वह उसे सरोवर के किनारे लगा दे वह खास बीज होगा जो दाम्पत्य प्रेम का हरा–भरा वृक्ष होगा।''[5]

राजस्थानी गीतों में मार्मिकता का अथाह भण्डार है। विवाह के पश्चात् कन्या के विदाई पर जो लोकगीत गाये जाते हैं वो अनायास ही हृदय को भाव–विभोर कर देते हैं। इसी प्रकार राजस्थान के पौराणिक ऐतिहासिक लोकगीतों में राजस्थान की वीरता की गाथा सुनाई व दिखाई देती है। राजस्थानी गीतों का जो साहित्य है उसमें अलंकार की इतनी विशेषता नहीं है जितनी कि चित्रात्मकता और वर्णनात्मक शैली, घटनाओं की श्रृंखला है और यह इस प्रकार आती है कि सामने एक चित्र खिंच जाता है जिसमें भावों का उद्वेग सा आ जाता है। अतः राजस्थानी लोकगीतों में काव्य की अनुपम धारा प्रभावित हो रही है जीवन के किसी भी पहलू के बारे में यह कहा नहीं जा सकता है कि जो इन लोकगीतों में वर्णित नहीं हुआ हो।

विवाह गीत

पैल के फेरे बनड़ी बाबोसा री प्यारी।
दूजे तो फेरे बनड़ी दादोसा री प्यारी।
तीजे तो फेरे बनड़ी बीरो सारी प्यारी।
चौथे तो फेरे बनड़ी हुई री पराई।''[6]

उपर्युक्त गीत फेरो का गीत (विवाह अवसर) कहा गया है। राजस्थान में सभी जगहों पर अपने–अपने ढ़ंग से गाया जाता है।

राजस्थान में विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीत –

ऋतु सम्बन्धी गीत

मोरिया आछो बोल्यो रे ढलती रात।
म्हारे हिवड़े में बैगी रे दुधार।
माली की म्हे तो वोल्यो रे म्हारी मौज सुं।
थारे किण विध बेरी रे दुधार।
माली की थारे बांगा की खिड़किया खोल दे।
म्हाने आवाड़े ....''[7]

उपर्युक्त राजस्थान में वर्षा ऋतु के समय गाया जाता है। राजस्थान की माली जाति के लोग गाते हैं।

दाम्पत्य गीत

म्हारी जोड़ी रा भंवर जी।
मारगियो लिलाणोरे भवन घर आव।
नैड़ी–नैड़ी करजो पिया ओ अलबेला हो सांझ पड़े धर आव।
ढ़ोला जी बाजू बंद री लूम्बा भंवर घर आव।''[8]

उपर्युक्त गीत राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में अधिक गाया जाता है। वर्षा के दिनों में नायिका का

पति–परदेस में है। वह उसे याद कर रही है। इस गीत में मधुर दाम्पत्य का भाव प्रकट हो रहा है।

व्यवसाय सम्बन्धी गीत

''नाका दो जोड़या का भोडोला।
चाले क्यूं न खेत में करेला तोड़ाला।
दारो जी तड़काऊ का गया खेत के माल।
उठ क्याने छाछ करली चूलो क्याने बाल।
थारो काई बिगड़े दादाजी मने लड़े सी।
खेतों में पाणी देणो है। क्यंया काम निमडसी।''[9]

उर्पयुक्त गीत राजस्थान में खेती करते समय अक्सर गाया जाता है। यह व्यवसायिक लोकगीत है।

भजन

डिग्गी पुरी का राजा।
थरे बाजे नौपत बाजा।
डिग्गी पुरी का राजा।
थारे चरणां सीस नवाऊं।
थारे दरसण करवा आऊं। दूर–दूर का जातरी थाने।
धावे उतारे आरती।
म्हारे डिग्गीपुरी का राजा।''[10]

राजस्थान में जयपुर के समीप डिग्गीपुर नामक एक गांव है। यहाँ भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति है जिसे ''कल्याण जी'' के नाम से भक्त पूजते हैं। यह गीत गूजर नामक जाति द्वारा गाया जाता है। अलगोजा, ढोल व मंजीरा के साथ लोग इसे बड़े चाव व भक्ति से गाते हैं।

त्यौहार सम्बन्धी गीत

पुजण दो गणगौर।
भंवर म्हाने पुजण दो गणगौर।
राज मोरी लाल ननद रा नीर।
भंवर माने खेलण दो गणगौर।
माथे ने मेंमद लाव भंवर म्हाने माथे ने मेमद लाव।
राज म्हारी रखड़ी अंदातारी मौज, भंवर म्हाने पूजण।''[11]

उपरोक्त गीत बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, किशनगढ़ में बहुत प्रचलित है। यह गणगौर त्यौहार पर महिलाओं द्वारा गाया जाता है।

विविध गीत

गोरबन्द

लडली लूमां झूमासा म्हारो गोरबन्द नखरालो।
भंवर जी खारा रे समन्द सूं कोड़ा मंगाया, जूनागढ़
गुंथायो रे म्हारो गोरबन्द नखरालो।
बदीला म्हारो गोरबन्द लू वालो।
लड़ली लूमा, लड़ली लूमा लड़की लूमा–लूमा सा।
असी रे कोड़ा कोड़ा तू उजला
में हड़वी काच बिड़ाया रे – म्हारो।''[12]

उपरोक्त गीत में ग्वालिन ने अपने भाई के विवाह के अवसर पर उपयोग में लाने के लिए ऊंट का हार बड़े परिश्रम से बनाया परन्तु दुर्भाग्य से वह खो गया और बहन दुःखी हुई। इस विषय पर यह गीत प्रचलित है।

मांड़

यह रजवाड़ी गीत है अधिकतर पेशेवर गायक ही इसे मांड राग में कलापूर्वक गाते हैं। आज भी माड़ गायकी राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध है।

केसरिया बालम।
आवो नी पधारो म्हारे देस, जोड़ी रा बालम।
साजन आया है सखी कांई भेंट करा।
थाल भरा गज मोतियों से।
ऊपर नैण धरां।
केसरियां बालम।
साजन साजन में करूं साजन जीव जड़ी।
सजन लिखाऊँ चूडले नाँचू घड़ी–घड़ी
केसरिया बालम।''[13]

उपरोक्त लोकगीतों में विविध गीत के उदाहरण हालरिये गीत, ओलू गीत, काछवो गीत, ईडोणी गीत, कांगसियो गीत, बिहूड़ा गीत, काजलियो गीत, पालने का गीत, आदि विविध गीतों के उदाहरण है।

क्षेत्रीय राजस्थानी लोकगीत

जैसलमेर के श्रृंगारिक लोकगीत

पश्चिमी राजस्थान का मरूस्थल एवं पर्यटन के लिए प्रसिद्ध जैसलमेर के लोकगीतों की ख्याति उनकी विशेष गायन शैली के लिए रही है। यहाँ के लोकगीतों में हार्दिकता, लयात्मकता और संप्रेषणीयता की भावना अद्वितीय है।

संस्कारों के गीत

जैसलमेर प्रदेश में गाये जाने वाले गीतों में 'हालरिया' गीत पुत्र जन्म के अवसर पर गाया जाता है। इस दिन गृह स्वामी दिल खोलकर खर्च करता है।

रण चढ़ण कंकण वंधण पुत्र बधाई चाव।
अ तीनू दिन त्याग रा, काई रंक कांई राव।।''[14]

पर्व एवं त्यौहारों के गीत

राजस्थान के जैसलमेर प्रदेश में दीपावली होली, हरियाली अमावस्या, रक्षाबन्धन आदि त्यौहार पर गीत गाये जाते हैं।

हरियाली तीज पर महिलायें सुन्दर वस्त्र धारण कर झूलों पर गीत गाती है।

सावण रा सतरह गया, आयी नवली तीज।
बेगी तोल दे बाणिया, म्हारी सासू मंगाई चीज़।।''[15]

इसी प्रकार गणगौर, तीज आदि त्यौहारों पर शिव–पार्वती की पूजा करते हैं।

इसी प्रकार जैसलमेर में मनोरंजन के गीत आदि विभिन्न अवसर पर वह गाये–बजाये जाते हैं। राजस्थान के पश्चिमी अंचल का लोक साहित्य, लोकगीतों की दृष्टि से अनंत समृद्ध है।

रजवाड़ी लोकगीत

राजस्थान की शासक संस्कृति का एक सजीव चित्रण इन गीतों में गाया जाता है। इतिहास, संस्कृति, साहित्य और राग इन सभी दृष्टियों से इन गीतों का महत्व है। गृहस्थ महिलाएं घर–घर में रजवाड़ी गीत गाती है। इन गीतों का भी अपना एक आकर्षण है। इन गीतों के साथ कोई ताल तथा वाद्य नहीं बजता है। इनमें पाबूजी, तीज, गणगौर, हिचकी, दारूणी, चौमासा, सावण, लेहरया, जज्यां म्होरतियां, साला जैसे अनेकानेक गीत पूरे राजस्थान में गाये जाते हैं।

हिचकी रजवाड़ी गीत

गैला में चौतारे राजन मारगियो चीतारे।
च एतड़ा हिचनी घड़ी ए घड़ी आके ऐ।''[16]

उपरोक्त गीत में एक विहरणी अपने प्रियतम को बार–बार याद करके हिचकी ले रही है इस कारण से विरहणी हिचकी से कह रही है। तू बार–बार मत आ, मेरे प्रियतम जो कि प्रवासी है उसको दुःख होगा।

ढूँढ़ाड़ क्षेत्रीय लोकगीत

लोक संगीत की दृष्टि से ढूंढाड़ भारत के समृद्ध प्रदेशों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

एक बार आओ जी जँवाई जी पावणा।
थाने सासू जी बुलावै घर आव, जंवाई लाडकड़ा।
सासू जी ने मालूम होवे, म्हारे धरा भाई हुयो।
म्हारे घरां छै मोखलो काम, सासूजी म्हाने माफ करो।
एक बार आओ जी जंवाई जी पावणा।
थाने सुसरा जी बुलावे घर आव, जंवाई लाड़कड़ा।''[17]

उपरोक्त गीत में सासू जी द्वारा जंवाई की मनुहार की जा रही है। सास अपने जवाई से निरन्तर ससुराल आने का निवेदन कर रही है। इन गीतों का सामूहिक गायन एक सुखद अनुभूति देता है। महिला समूह द्वारा गाये जाने वाले ये गीत अनुशासन में आबद्ध किसी वाद्य–वृन्द से कम नहीं होते हैं।

राजस्थानी लोकाचार गीत (पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर)

राजस्थानी लोकाचारी गीत शादी–विवाह, राति जगा, बच्चे के जन्म आदि अवसरों पर महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से गाये–बजाये जाते हैं जो राजस्थानी संस्कृति व विधि विधान के साथ गाये जाते हैं। जैसे – जन्म के गीत, चूड़ा के गीत, जनेऊ के गीत, विवाह के गीत, रातीजगा के गीत, शीतला माता के गीत, पथवारी के गीत, तुलसी विवाह के गीत, गणगौर पूजन के गीत, होली के गीत, आदि लोकाचारी गीत जो जीवन में विभिन्न अवसरों पर प्रयोग में लाये जाते हैं।

मायरो गीत

म्हारो टीको ले लो, जावो भाणेजा रे ब्याव।
म्हारी झूमर ले लो, जावो भाणेजा रे बयाव।
मैं कैसे जाऊं नूंतणं नी आयी म्हारी बैण।
वे भली मती आओ, मां की जायी छे थांकी बैण।
थे ऊठो जावो जामण की जायी है थांकी बैण
वां ने कोई न जाणे, आपणे जाणेलो संसार।
थैं जावो जी जावो पंचा में राखो बाई का मान।''[18]

राजस्थानी लोकगीतों में प्रयुक्त राग एवम् ताल

राजस्थानी लोकगीतों में स्वरों की व्यवस्था भी क्रमिक और स्वाभाविक है। लोकगीतों में हमें तिलक–कामोद, सारंग, भूपाली, दुर्गा, पहाड़ी, पीलू मांड़, देस, खमाज, देसी बिलावल, शुद्ध कल्याण, नट, झिंझोटी आदि रागों में मिलते हैं तथा राजस्थानी लोकगीतों में कहरवा, दादरा, चाचर, तीव्रा और रूपक आदि तालें प्रयुक्त होती हैं।

राजस्थानी लोकगीत में प्रयुक्त वाद्य

राजस्थानी लोकगीतों में प्रयुक्त वाद्य यंत्र एकतारा, जंतर, रावण हत्था, सारंगी, कामायचा, मंजीरा, मोरचंग, करताल, अलगोचा, तुरही, मशक, ढोलक, नगाड़ा, मादल, ढोल, खंजरी आदि तत, अवनद्ध, सुषिर, घन वाद्य लोकगीतों में प्रयुक्त होते हैं जो राजस्थान की लोकसंगीत परम्परा को समृद्ध बनाते हैं।

राजस्थानी लोकगीत एवम् नृत्य

राजस्थान में दक्षिण–पश्चिम का पहाड़ी इलाका नृत्य की दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में नट, गिरासिये, भील, बनजारे जातियां निपुण है। राजस्थान के सबसे विशेष गीत जो कि नृत्यों के साथ गाये जाते हैं वे हैं 1. घूमर और लूर, 2. फाग, जशमादे।[19]

1. म्हारी घूमर छै नखराली ए माय
2. म्हारी लूहर छै नखराली (मेवाड़)
3. खेलण दो गिणगौर म्हने।
4. सखर पाणीडे ने जाऊं।
5. राजा थारे महलां कोयल बोले ढोला मारू जी।
6. आज तो मेवाड़ों रावो आवसी, ए भोली घूमर ले।''[19]

निष्कर्ष

अंतःनिश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि राजस्थानी लोकगीत हमारी अमूल्य धरोहर है यह हमारी सांस्कृतिक विरासत है। इन लोकगीतों के माध्यम से राजस्थान की रंग–रंगीली धरती, वीरों की धरती, रेगिस्तानी भूमि का दृश्य आँखों में तुरन्त छा जाता है यहाँ कि भूमि की विशेषता है कि लोकगीत स्वतः ही अवसर के अनुसार प्रस्फुटित होने लगते हैं। क्योंकि लोकगीत वह सरिता है जिसका उद्‌गम अनन्त है और जो प्रतिपल कल–कल करती अपने नवीन तटो को जीवनदान देती जाती है और निरन्तर प्रवाहित हो जन–गन का मंगल करती रहती है। जन साधारण जन अपने जीवन में आने वाले विभिन्न अवसरों पर सामूहिक गायन करते हैं जो उनके मनोरंजन व स्वतः सुखाय का आनन्दित साधन है और यही कारण है कि ये राजस्थानी लोकगीत सहज ही मन को आकर्षित कर लेते हैं और राजस्थान की पहचान बन कर हमारी अमूल्य धरोहर बनते जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *ढूँढाड़ी लोक गीतों का सांगीतिक विवेचन : डॉ. अनुर्सूया पाठक, पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर, प्रथम संस्करण 2005, पृ.सं. 10*
2. *राजस्थान का लोकगीत : शन्नो खुराना, सिद्धार्थ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1995, पृ.सं. 13*
3. *जैसलमेर के श्रृंगारिक लोकगीत : डॉ. भूराराम सुथार, अंकुर प्रकाशन, उदयपुर, प्रथम संस्करण 2008, पृ.सं. 38*
4. *ढूँढाड़ी लोकगीतों का सांगीतिक विवेचन : डॉ. अनुर्सूया पाठक, पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर, प्रथम संस्करण 2005, पृ.सं. 17–18*
5. *राजस्थान का लोक संगीत : शन्नो खुराना, सिद्धार्थ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995, पृ.सं. 37*
6. *वही, पृ.सं. 65*
7. *वही, पृ.सं. 79*
8. *वही, पृ.सं. 68*
9. *वही, पृ.सं. 77*
10. *वही, पृ.सं. 47*
11. *वही, पृ.सं. 62*
12. *वही, पृ.सं. 121*
13. *वही, पृ.सं. 126*

14. *जैसलमेर के श्रृंगारिक लोकगीत : डॉ. भूराराम सुथार, अंकुर प्रकाशन, उदयपुर (राज.) प्रथम संस्करण 2008, पृ.सं. 40*
15. *वही, पृ.सं. 45*
16. *रजवाड़ी लोकगीत : पद्मश्री लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत, श्याम प्रकाशन जयपुर, प्रथम संस्करण 2000, पृ.सं. 30*
17. *ढँढाड़ी लोक–गीतों का सांगीतिक विवेचन : डॉ. अनुर्सूया पाठक, पब्लिकेशन स्कीम जयपुर, प्रथम संस्करण, 2005, पृ.सं. 148*
18. *राजस्थानी लोकाचार गीत : चन्द्रकान्ता व्यास, श्री अंकित प्रकाशन, उदयपुर (राज.), संस्करण 2010, पृ. सं. 87*
19. *राजस्थान का लोक संगीत : शन्नो खुराना, सिद्धार्थ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995, पृ.सं. 162*